कोरोना के समय में रसोई

भारतीय वैज्ञानिकों का कोविद-19 के विरूद्ध प्रयास
एक स्वप्रेरित मंडली

IndiSciCovid

https://indscicov.in/

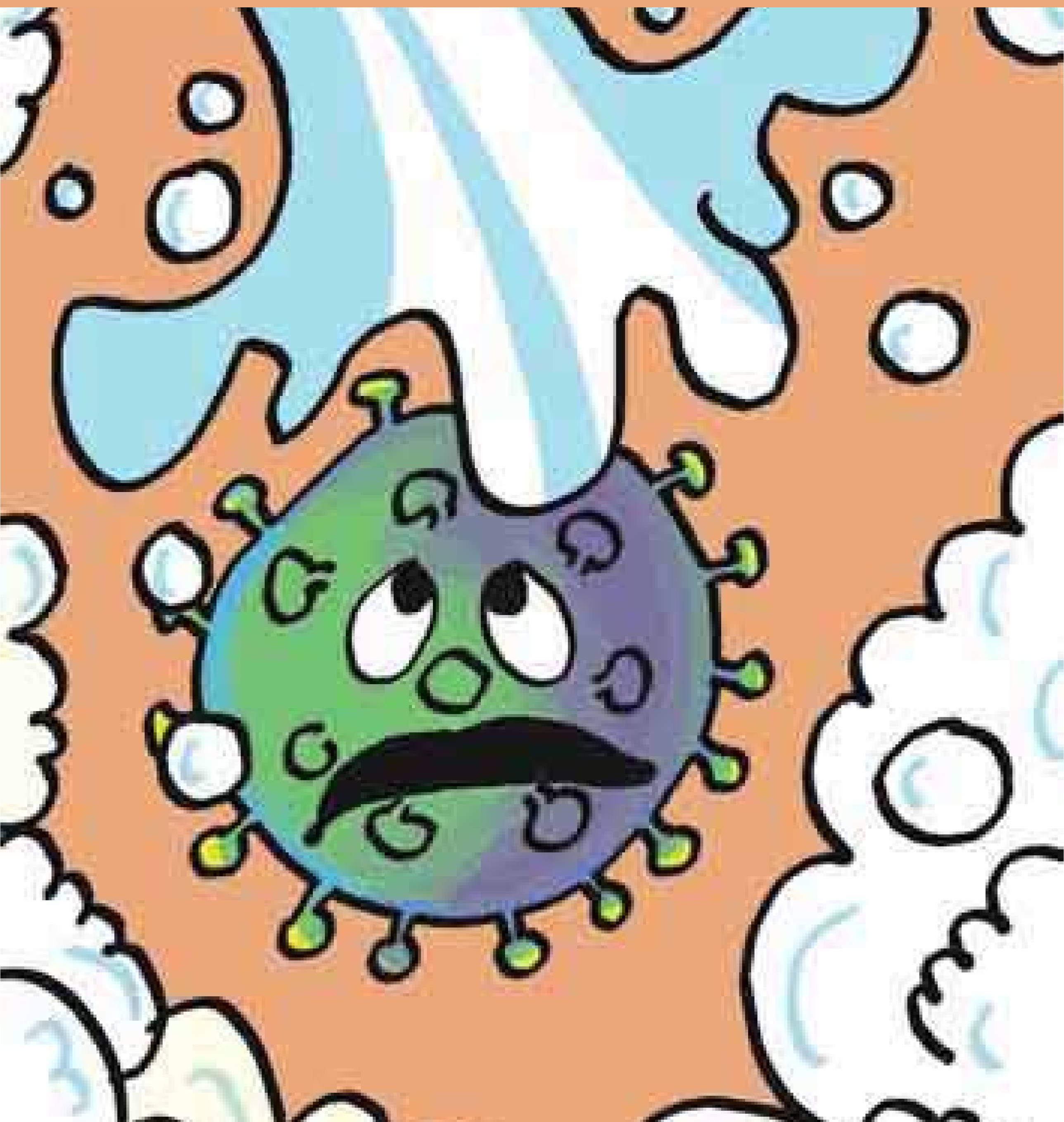

Indian Scientists' Response to COVID-19

शाम हो गयी थी और मुझे हलकी सी भूख लगी थी।

“पापा, क्या आज अपनी स्पेशल चिकन करी बना दोगे, प्लीज ? मसाला ज़रा ज्यादा डालना!” मैंने कहा। माँ ने भी झट से मेरी हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, “आज मैं काफी थक गयी हूँ, आप आज अपनी करी बना ही दो !”

“ठीक है”, पापा ने कहा और साबुन से हाथ धोने के लिए बेसिन की ओर बढ़ गए। उन्हें समय का ध्यान दिलाने के लिए मैने 20 से उल्टी गिनती शुरू कर दी और माँ भी मेरे साथ-साथ गिनने लगी। पापा को रेडियो सुनते हुए, नीचे फर्श पर बैठ कर सब्ज़ी काटना अच्छा लगता है। सुबह जब रमेश चाचा कुछ पत्रिकायें देने आये थे, तो वे भी वहीँ बैठे थे। मुझे याद है कि पापा ने उनके जाते ही वह सारी सतह साबुन और स्पंज से साफ़ की थी। वे बैठे और चिकन और हरी मिर्च काटना शुरू किया। मैंने आग्रह किया, “थोड़ी मिर्च और डालो न“ .

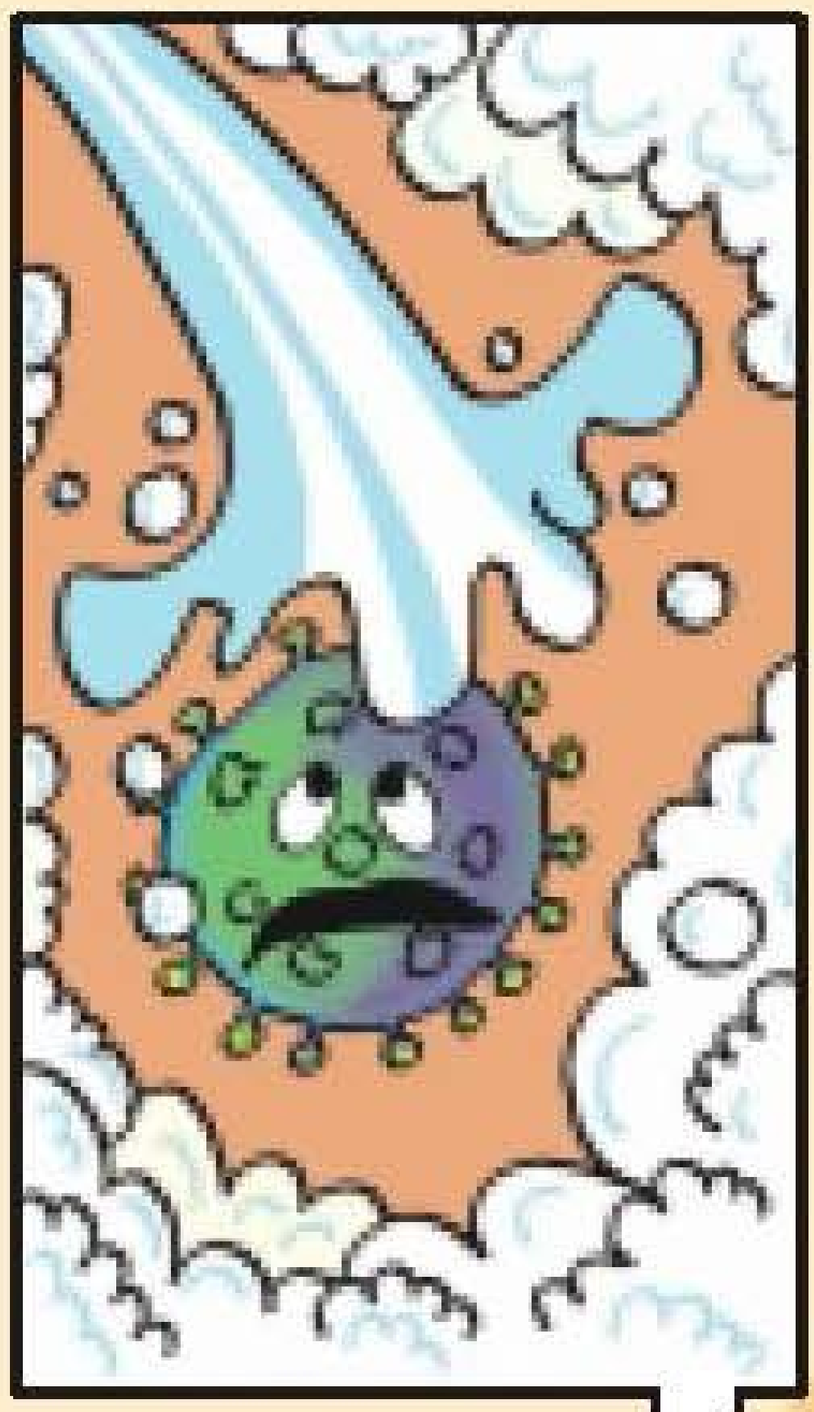

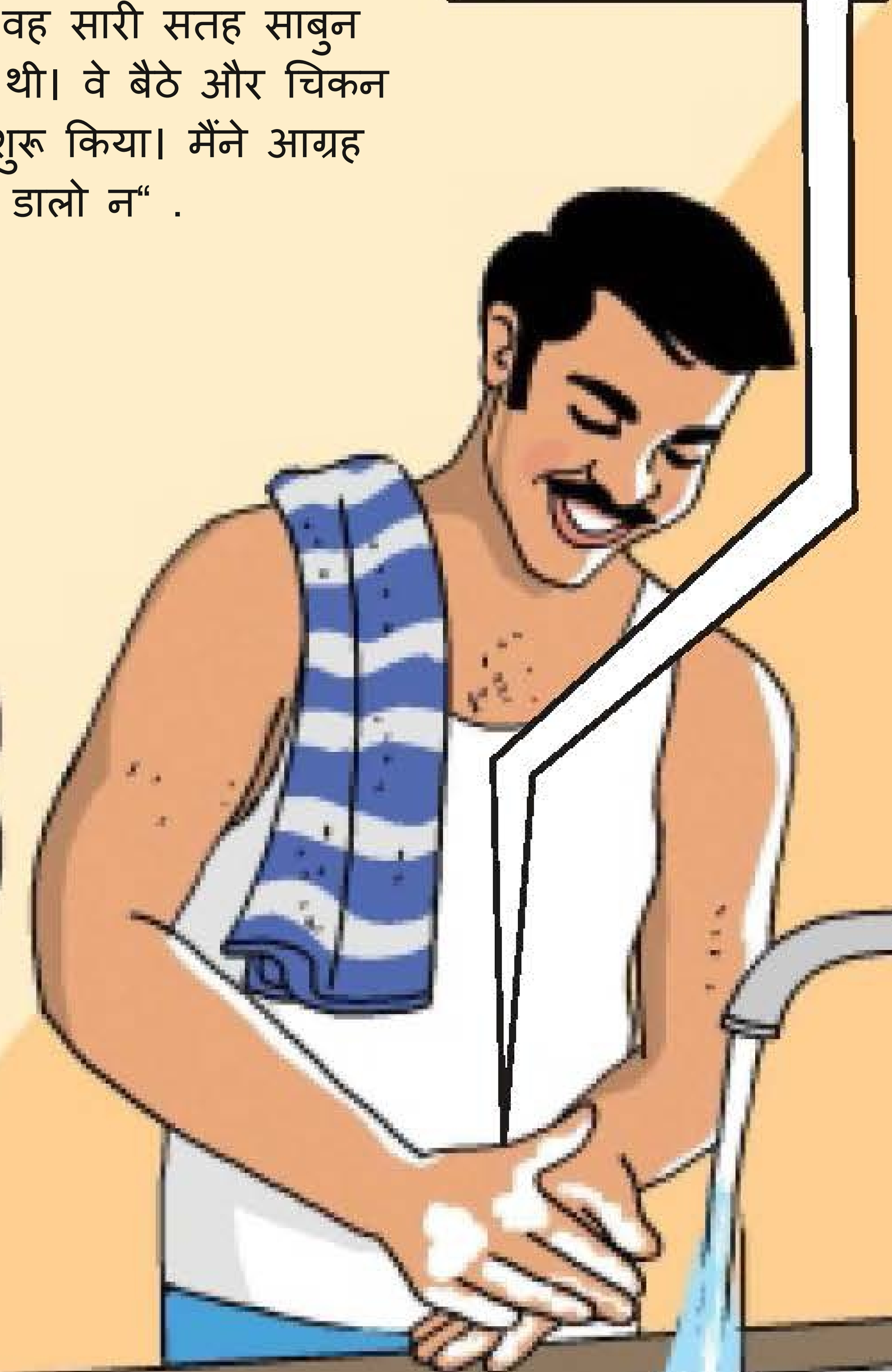

“बेटी क्या तुम मेरे लिए प्याज़ काटोगी ?”,

“ना बाबा ना... प्याज़ मुझे रुला देते हैं”, मैंने कहा। उन्होंने फिर तीन प्याज़ पानी से धोये और उन्हें छीलने लगे। इतने में पड़ोस की सरला ऑन्टी आईं और दरवाज़े के बाहर खड़े होकर ही माँ से बात करने लगीं। “तुम्हें पता है, मेरी बहन ने क्या किया ? उसने तो चिंता के मारे प्याज़ और टमाटरों को भी साबुन से धो डाला। पूरे परिवार को साबुन वाला भोजन खाना पड़ा!” इस दृश्य कि तो कल्पना से ही मेरी हंसी रोके नहीं रुक रही थी!

“यह विषाणु (virus) खाने की चीज़ों पर नहीं उगता, पता है? और वैसे भी खाना पकाते समय यह नष्ट हो जाता है। यह बैक्टीरिया जैसा नहीं है।”, माँ ने समझाया। हाँ, यह तो मुझे भी पता था। “लेकिन वो प्याज तो बाज़ार से आये थे, उन्हें तो हर किसी व्यक्ति के हाथ लगे होंगे ना?”, मैने पूछा। “हाँ मेरी छोटी सी गुड़िया”, माँ मुस्कुरा कर बोली, “इसलिए तो जब तेरा भाई बाजार से कल सब्ज़ियाँ लाया था तब मैने

इन सब सब्ज़ियों को पानी से बहुत अच्छी तरह से धोया था।”... “ और फिर मैने पूरे 20 सेकंड तक साबुन से हाथ धोये!”, हम दोनों एक साथ बोल पड़े ।

सरला ऑन्टी ने पापा कि ओर देखा। “ओह, तो तुम अपना ख़ास चिकन बना रहे हो। पर मैने तो WhatsApp (वॉटसएप्प) पर पढ़ा था कि यह विषाणु पहले जानवरों से ही आया था? तो ऐसे में क्या चिकन खाना सुरक्षित है?”, उन्होंने पूछा। “हाँ हाँ... ”, पापा ने ज़ोर दे कर कहा, “यह विषाणु सिर्फ एक इंसान से दूसरे इंसान तक फैलता है। माँसाहारी खाना पूरी तरह सुरक्षित है। डॉक्टरों का भी यही कहना है।”, वे बोले। भला हो भगवान का, मैने मन ही मन सोचा। इतने में उनकी बेटी ने उन्हें आवाज़ लगाई और सरला ऑन्टी वापस अपने घर चली गयीं।

तभी शेखर भैया भी दुकान से वापस आ गए। माँ ने उन्हें चावल और तूर दाल और मेरे लिए क्रीम वाले बिस्किट लेने के लिए भेजा था ! उन्हें बाहर दरवाज़े पर असमंजस में खड़े देख कर माँ ने कहा, “किस उलझन में हो, एक मिनट वहीँ रुको बेटा।” माँ रसोई में गयीं और दाल चावल रखने वाले बड़े डिब्बे निकाल लायीं। उन्होंने डिब्बे खोले और भैया को दाल चावल के प्लास्टिक के पैकेट काट कर खोलने को बोला। “मेरे डिब्बों को हाथ नहीं लगाना, बारी-बारी से दाल और चावल सीधा इन डिब्बों में उलट दो।”, माँ ने भैया को कहा, “ध्यान रहे, नीचे बिलकुल नहीं गिरना चाहिये!” उन्हें इतने ध्यान से दाल चावल डालते हुए देख

मुझे बड़ा मज़ा आ रहा था। फिर उन्होंने बिस्किट का पैकेट खोल कर भी, बिना डिब्बे को छुए, सारे बिस्किट डिब्बे में डाल दिए। “वाह !”, काम पूरा होने के उपलक्ष्य में भैया ख़ुशी से चिल्लाये। कभी-कभी वो ऐसी बचकानी हरकतें करते हैं, और हम सब साथ में ज़ोर से हंस पड़े। मुझे याद आया जब सरला ऑन्टी सुबह आलू की सब्ज़ी लायीं थीं, वह भी माँ ने सीधा हमारे बर्तन में उड़ेल दी थी।

“अब मैं इस प्लास्टिक और कागज़ का क्या करूँ ?” शेखर भैया ने माँ से पूछा। माँ ने उन सब को एक प्लास्टिक कि थैली में डाल कर बाहर रखे कूड़ेदान में डालने को कहा। इसके बाद भैया चप्पल बाहर उतार कर अंदर आ गए। “पूरे 20 सेकंड तक हाथ धो लो”, मैंने कहा। उनके पीछे खड़े हो कर मैं ध्यान रख रही थी कि वे ठीक से हाथ धो रहे हैं या नहीं। फिर वे कपड़े बदलने के लिए अंदर चले गए।

तब तक पापा रसोई में चले गए थे। उन्होंने सभी बर्तन, चम्मचें, यहां तक कि स्टोव को भी साबुन वाले पानी से सुबह ही धो दिया था। जल्द ही कड़ी पत्तों और हींग के छौंक कि सुगंध पूरे घर में फ़ैल गयी। उन्होंने चिकन को कड़ाही में डाला और उसे पकाते हुए माँ, जो बाहर अपना मनपसंद टीवी सीरियल देख रही थीं, से पूछा, “तुमने बगल की बिल्डिंग के गोल्डी के बारे में सुना? उसे खांसी ज़ुकाम भी है, और पिछले हफ्ते उसे हल्का सा बुखार भी था।”

“हे भगवान्, उसके परिवार वाले कितना डर गए होंगे। क्या हमें उनसे मिलने जाना चाहिए ?”, शेखर भैया ने पूछा। माँ ने सर हिलाया और कहा, “नहीं इस समय उस पूरे परिवार को सबसे अलग रहना आवश्यक है।” मैं सोचने लगी कि ऐसे में गोल्डी अपने परिवार के साथ खाना कैसे खायेगा। मैंने पूछा कि क्या उसके लिए भी कोई चिकन करी बना सकता है ? “हाँ, क्यों नहीं ?”, माँ बोलीं। “उन्हें बस बहुत ध्यान रखने कि

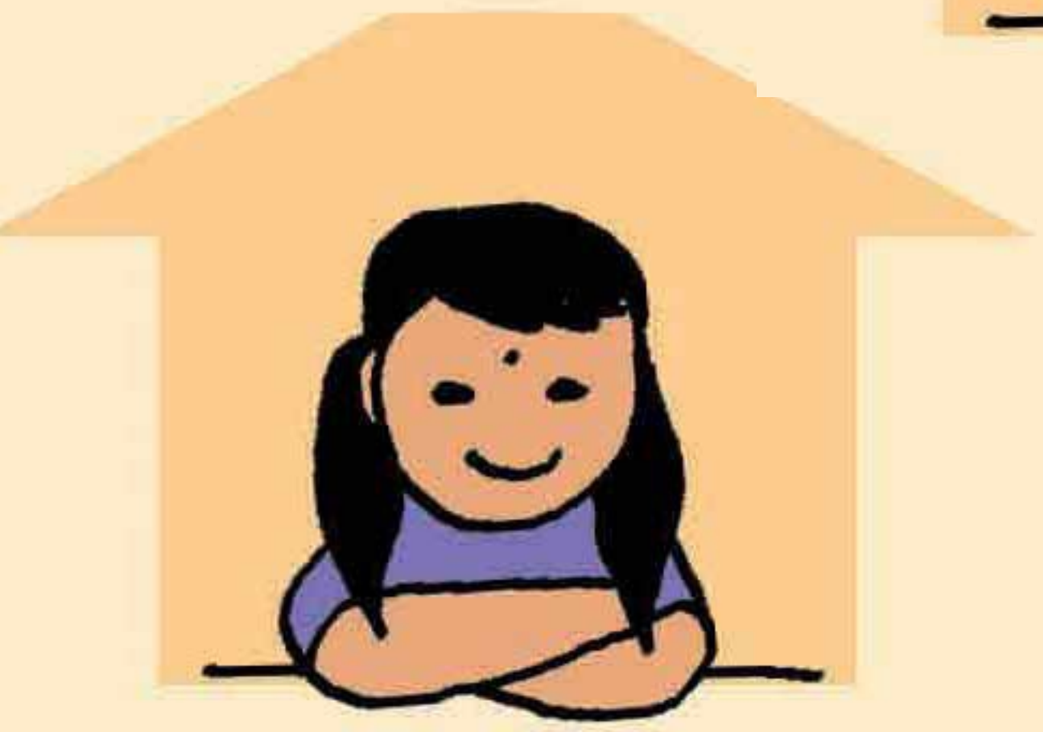

जरूरत है। उसे सिर्फ अपने कमरे में ही रहना होगा, और कोई परिवार जन उसके लिए खाना ले आयेगा, और उसका खाना होने के बाद बर्तन भी धो देगा।" मैं आशा करती हूँ कि गोल्डी जल्दी ही ठीक हो जाये, उसने मुझे पतंग उड़ाना सीखने का वादा जो किया है!

"खाना तैयार है !",पापा ने ऐलान किया। उन्होंने सबको हाथ धोने भेजा और अपनी-अपनी थालियाँ लाने को बोला। फिर उन्होंने सबकी थालियों में चावल और करी डाली। "आप हमारे साथ नहीं खाओगे?", मैने पूछा। "एक मिनट रुको ", कह कर वे अपनी नाक ज़ोर से खुजाने लगे। "पिछले आधे घंटे से मैं नाक खुजलाना चाहता था, लेकिन कर नहीं पा रहा था क्योंकि मैं खाना बना रहा था। अब मैं कर सकता हूँ !", वे खुश हो कर बोले। हम सब ठहाके लगा कर हँसने लगे और वो हाथ धोने चल पड़े। एक दूसरे से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठ कर फिर हमने दुनिया कि सबसे अच्छी चिकन करी खायी!

इन कहानियों का अभिप्राय दी गयी जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए कुछ उदाहरण प्रदान करना है। इस कारण से यहाँ जानकारी को सरल रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी और वैज्ञानिक सटीकता के लिए कृपया वेबसाइट पर उपलब्ध अन्य सहायक लेख अवश्य देखें।